विश्वमांगल्य सभा, महाराष्ट्र द्वारा नागपुर में 24 दिसम्बर 2016 को आयोजित 'मातृ संसद' में माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण

1. आज आप सबके बीच इस **''मातृ संसद''** में आना मेरे लिये सौभाग्य का विषय है। इस धर्म संस्कृति के महाकुंभ की परिकल्पना कर उसके इतने विशाल आयोजन के लिये मैं सभी आयोजकों को हार्दिक बधाई देती हूं।

2. मां, मातृत्व और मातृभूमि। इन तीनों का हमारी संस्कृति में विशेष महत्व है। जैसे मां ममता, प्रेम, दया, सहिष्णुता और करूणा की सजीव मूर्ति होती है, उसी प्रकार मातृभूमि हमारे लिए सीमाओं से बंधा कोई जमीन का टुकड़ा नहीं है, इसी मिट्टी से पैदा होकर इसी मिट्टी में मिल जाने की भावना हमारे अंदर मातृभूमि के प्रति ऐसा अटूट प्रेम जगाती है। जैसे बुन्देलखंड की भूमि में रानी लक्ष्मीबाई का रक्त है, वहीं राजस्थान की भूमि में वीर महाराणा प्रताप का रक्त है। वीर इन्हें अपने रक्त से सींचते हैं, जबकि किसान अपने पसीने से। इसी प्रकार, मातृभाषा केवल संप्रेषण की भाषा नहीं है बल्कि यह संस्कार और संस्कृति को संजोकर रखने एवं अगली पीढ़ी में हस्तांतरित करने में महत्वपूर्ण योगदान देती है। इसलिए, मां, मातृभूमि और मातृभाषा तीनों हमारे लिए सर्वदा वन्दनीय हैं।

3. हमारे देश की महिलाएं सदैव से समाज को दिशा देती रही हैं। यह मूलतः कर्तृत्व, मातृत्व और नेतृत्व पर आधारित है। जीजाबाई, अहिल्याबाई और रानी लक्ष्मीबाई तीनों क्रमशः कर्तृत्व, मातृत्व और नेतृत्व के साक्षात् उदाहरण हैं। जीजा माई के बिना शिव बा कैसा? इतिहास साक्षी है कि जीवन के विकासात्मक मूल्यों, आदर्शों एवं समाज के सृजन में महिलाओं की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण रही है।

4. वैदिक युग भी इस बात का साक्षी है कि भारतीय समाज का आदर्श स्त्री रूप में निहित था। यही कारण है कि वैदिक भारत में स्त्री को देवी स्वरूपा माना गया। प्रत्येक देवी विद्या, लक्ष्मी, शक्ति, सौन्दर्य पवित्रता तथा सर्वव्यापी ईश्वर को भी ''जगज्जननी'' के नाम से संबोधित किया है।

5. आधुनिक युग में जहां स्कूली शिक्षा का जोर ज्ञान और विज्ञान पर होता है लेकिन संस्कार तो हमे आज भी माता एवं परिवार से ही मिलता है। माता प्रत्येक शिशु के लिए प्रथम गुरू होती है और परिवार प्रथम पाठशाला। अतः, संस्कार और सभ्य समाज के निर्माण में परिवार की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। परिवार में एक दूसरे के प्रति प्रेम, आत्मीयता, व्यवस्था, नियम, अनुशासन,

विश्वास, निःस्वार्थ समर्पण, परस्पर सम्मान एवं समझ जैसे गुणों का स्वतः ही विकास होता है। एक मानव के लिए जो उपयुक्त गुण चाहिए, उन सभी का विकास परिवार में होता है। परिवार वह सुरक्षा कवच है जिसमें रहकर मनुष्य शान्ति का अनुभव करता है। एक महान सन्त कन्फ्यूशियस ने परिवार के विषय में कुछ कहा था जिसे मैं उद्धृत करती हूंः– "To put the world right in order, we must first put the nation in order; to put the nation in order, we must first put the family in order; to put the family in order, we must first cultivate our personal life; we must first set our hearts right."

6. हम सभी जानते हैं कि हमारी सभ्यता और संस्कृति सदियों पुरानी है और इस समृद्धिशील एवं उत्कृष्ट सभ्यता के मूल में स्त्री शक्ति ही है। आदिमानव काल से ही नारी ने परिवार की व्यवस्था को बनाया। परिवार के ही विकास से सुसभ्य समाज का निर्माण हुआ। वास्तव में परिवार से समाज का, समाज से देश का निर्माण होता है। इन सभी के मूल में नारी शक्ति ही है। वे सभ्यता और संस्कृति की वाहिनी हैं एवं पीढ़ी–दर–पीढ़ी मूल्यों और परम्पराओं के हस्तांतरण में केन्द्रीय भूमिका निभाती हैं।

7. परिवार का, कुल का हमारे देश के विधायी तथा सांस्कृतिक इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान है। भारतीय समाज में आदिकाल से कुल की परम्परा एक प्रतिष्ठित व जरूरी चीज मानी गई है। हर कुल की अपनी विशेषता रही है और इनका सार ही एक कुटुम्ब, फिर कबीला एवं एक समाज में दिखती है। हम सबने सुना हैः–

''रघुकुल रीत सदा चली आई, प्राण जाए पर वचन न जाई।।''

समकालीन कुलों की बातें, मान्यताएं एवं आदर्श, उस समय के समाज व भविष्य की मार्गदर्शक हो जाती हैं। ऋग्वैदिक काल में पुर, यदु, तुर्वशा, अनु, शिवा आदि कुल भारत के अलग–अलग जगहों पर थे और उनकी रीति, मान्यताओं एवं परम्पराओं इत्यादि ने उस समाज में तथा उन जगहों पर अपना सुप्रभाव छोड़ा। भारत एक बहुसांस्कृतिक, बहुजातीय एवं बहुधार्मिक देश है। यहां परिवार की Dyanamics समाज की दशा और दिशा निर्धारित करते हैं। वस्तुतः, परिवार ही वह कड़ी है जो हमारे संस्कृति एवं परम्परा के अनुसार समाज को मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

8. समस्त विश्व, राष्ट्र एवं समाज का विकास इन्हीं सद्गुणों पर आधारित है और परिवार नामक संस्था ही भौतिक, आध्यात्मिक और नैतिक संरक्षण प्रदान करते हुए व्यक्ति को उत्थान के

मार्ग पर ले जा सकती है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष जीवन के चार पुरुषार्थ कहे गए हैं। हमारे यहां चार आश्रमों की व्यवस्था है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास। इन सभी आश्रमों में सर्वश्रेष्ठ आश्रम गृहस्थ आश्रम को माना गया है। बाकी तीनों आश्रमों के लिए सभी व्यवस्थाएं प्रदान करने का दायित्व उन्हीं का है। उन सभी की पूर्ति का मार्ग और व्यवस्था परिवार से ही निकलती है।

9. परिवार ही सांस्कृतिक संरक्षण एवं संवर्धन के लिए अत्यन्त आवश्यक कड़ी है। रामायण एवं महाभारत काल में भी कई ऐसे परिवार थे जिन्होंने समाज में व्यवस्था स्थापित करने एवं उनके कल्याण की दिशा में उल्लेखनीय योगदान दिया एवं कई आदर्श प्रस्तुत किए। आधुनिक युग में भी, जहां तक कलात्मक एवं सांस्कृतिक विरासत का प्रश्न है, हमारे यहां संगीत एवं अन्य कला के क्षेत्र में कई परिवार ऐसे हैं जिन्होंने उन उत्कृष्ट कलाओं का संरक्षण एवं संवर्धन किया है जो हमारी धरोहर हैं। नृत्य के क्षेत्र में पंडित बिरजू जी महाराज का परिवार, संगीत के क्षेत्र में पं. रविशंकर जी का परिवार एवं गायन के क्षेत्र में मंगेशकर परिवार उस विख्यात परम्परा के संरक्षण एवं संवर्धन का कार्य कर रहे हैं। इसी प्रकार राजनीति के क्षेत्र में भी कई परिवार अपनी परम्परा का निर्वहन कर रहे हैं। हमारे वीर सैनिकों के परिवारों की परम्परा रही है कि उन्होंने राष्ट्र प्रेम एवं त्याग का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया है। तात्पर्य यह है कि परिवार हमारी समृद्धि एवं विशिष्टता के वाहक हैं। अतः, उनके योगदान को कोई भी समाज नकार नहीं सकता है।

10. परिवार, समाज, प्रान्त, राष्ट्र और विश्व सभी में लोकतांत्रिक परम्पराएं विकसित करने का श्रेय भी अन्ततः परिवार को ही जाता है। आपसी मतैक्य स्थापित करने की परम्परा ने ही पंचायत एवं गण प्रमुख की व्यवस्था को ईजाद किया। बाद में, यही लोकतंत्र की बुनियाद बनी। वैशाली में लिच्छवि का गणराज्य प्रथम लोकतांत्रिक व्यवस्था मानी जाती है। यही आज सम्पूर्ण विश्व में लोकतंत्र के रूप में विकसित हुई। आज पूरे विश्व में से आधे से अधिक राष्ट्रों में लोकतंत्र स्थापित है जो शासन की सर्वश्रेष्ठ व्यवस्था कही जा सकती है। इस सर्वश्रेष्ठ व्यवस्था के मूल में तो नारी ही है क्योंकि वही परिवार की धूरी है।

11. भारतीय संस्कृति का अर्थ है कर्म, ज्ञान, भक्ति की जीती–जागती महिमा; शरीर बुद्धि और हृदय को सतत् सेवा में लीन करने की महिमा। भारतीय संस्कृति का अर्थ है सान्त से अनन्त की ओर जाना। भेद से अभेद की ओर जाना, कीचड़ से कमल की ओर जाना, विरोध से विवेक की

ओर जाना, अव्यवस्था से व्यवस्था की ओर जाना। भारतीय संस्कृति का अर्थ है मेल, सारी जातियों का मेल, सारे धर्मों का मेल, ज्ञान–विज्ञान का मेल। भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रचार–प्रसार भी इसलिए हुआ कि इसी संस्कृति में शिक्षा, सहिष्णुता, निष्ठा एवं सबको साथ लेकर चलने की काबिलियत है। हमने प्रेम से देशों को जीता है, युद्ध से नहीं। **''वसुधैव कुटुम्बकम्'' व ''सर्वे भवन्तु सुखिनः''** वाली यह संस्कृति मानव जाति के बेड़े को मंगल की ओर ले जाने की इच्छा रखती है।

12. अथर्ववेद में यह कहा गया है **''माता भूमि पुत्रो अहं पृथिव्यां''**। यह धरती हमारी माता है और हम इसके पुत्र हैं। धरती माता हमारे जीवन के अस्तित्व का एक प्रमुख आधार है, हमारा पोषण करती है, इसलिए वेद आगे कहते हैं–**''उप सर्प मातरं भूमिम्''**। हे मनुष्यो! मातृभूमि की सेवा करो। अपने राष्ट्र से प्रेम करो। मातृभूमि के प्रति ऐसा भाव केवल और केवल भारत में ही है। **''वयं राष्ट्रे जागृयाम् पुरोहिता''**। यजुर्वेद में कहा है–**''नमो मात्रे पृथिव्ये, नमो मात्रे पृथिव्याः''** अर्थात् माता पृथ्वी को नमस्कार है, मातृभूमि को नमस्कार है। माता और मातृभूमि के बारे में यह भी कहा गया है कि **''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी''।**

13. कई बार आपने देखा होगा कि जब हम किसी मंदिर या गुरूद्वारे में, अथवा अन्य किसी उपासना स्थल पर जाते हैं तो हम नमस्कार की मुद्रा में अपने सिर झुकाते हैं और पुजारी हमारे हाथ में प्रसाद रख देता है। अक्सर, पुरुष प्रसाद खाकर अपने हाथ पोंछ लेते हैं और चले जाते हैं। परंतु कोई भी महिला केवल थोड़ा–सा ही प्रसाद खाएगी और बाकी अपने पूरे परिवार में बांटने के लिए रख लेती है। यह एक महिला की स्वाभाविक प्रकृति और चरित्र है।

14. भारत वर्ष अगर आज विश्व में गर्व से सिर ऊंचा किए खड़ा है, तो इसका श्रेय हमारी संस्कृति को है। कई गौरवपूर्ण प्राचीन संस्कृतियां अब खण्डहर हो चुकी हैं जबकि भारतीय संस्कृति ऐसी संस्कृति है जो प्राचीनतम होते हुए भी जीवित व क्रियाशील है क्योंकि वह परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाती है। स्वतंत्र चिंतन, समन्वय, सहिष्णुता, ग्रहणशीलता, उदारता, भारतीय संस्कृति की मूलभूत विशेषताएं रही हैं। भारतीय दर्शन के अनुसार **'ईश्वरः सर्व भूतानां हृद्देशेजुनांतिष्ठति।' (अर्थात् ईश्वर सबके हृदय में निवास करते हैं।)**

15. एक ग्रीक यात्री ने पहली शताब्दी में भारत भ्रमण के दौरान यह अनुभव किया था कि भारत एक ऐसा देश है जिसके पास सब कुछ उपलब्ध है, परंतु यहां के लोग उपलब्ध संसाधनों के उपयोग में मितव्ययिता अपनाते हैं। वे उनका उपयोग करते हैं, दोहन नहीं करते। वे उन

संसाधनों का उपयोग बहुत बुद्धिमता से करते हैं तथा इस बात का ध्यान रखते हैं कि ये संसाधन पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित होती रहे एवं सभी उन्हें सुरक्षित रखने के बारे में जानते हैं।

16. पृथ्वी की रक्षा का मतलब पर्यावरण की रक्षा! इस भूमि का पूजन व रखरखाव हमारी धरती मां को प्रदूषण मुक्त रखेगी ही, वह चिर काल तक हमें पोषण करती रहेगी। भारतीय संस्कृति ने हमेशा पंचभूत पर विश्वास किया है यानी पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। शास्त्र में वर्णित है:–**''क्षिति जल पावक गगन समीरा, पंचतत्व मिल बना शरीरा।''** हम अपने कर्म और ज्ञान, दोनों से इन पंचमहाभूतों के मर्म को समझते हुए भारतीय पद्धति से जीवन जीते हैं और यही हमारी विशेषता है। हमलोगों ने प्रकृति का निरंतर संरक्षण किया है और दुनिया को सिखाया है कि पर्यावरण संरक्षण कैसे किया जाए? हमारे धर्मग्रन्थ, हमारी जीवन पद्धति, हमारा सब कुछ पर्यावरण व सृष्टि को सहेजने के लिए है। इसीलिए तुलसी, नीम, वटवृक्ष, पीपल की हर घर में पूजा होती है।

17. सन्त जन अपने ज्ञान से देश, काल और परिस्थिति का सटीक आकलन कर पाते हैं। वे निराकार भाव से समाज को भविष्य के लिए मार्गदर्शन देते हैं एवं अपनी संस्कृति को सहेजकर रखने की प्रेरणा देते हैं। वे केवल स्व–मोक्ष तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि वे सब इस जीवन की सत्यता को समझते हुए एक आदर्श जीवन जीने की कला को जन–जन तक पहुंचाने का पुण्य कार्य कर रहे हैं। तभी तो आदर भाव से हम सब उन्हें सन्त कहते हैं। इस तरह के आध्यात्मिक समागम में उनकी उपस्थिति से निश्चय ही वहां के वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

18. भारत को एक विश्वस्तरीय देश बनाने हेतु एक साझा दृष्टिकोण विकसित करने के लिए समग्र प्रयासों की आवश्यकता है। जब हम एकजुट होकर ऐसी परिस्थितियां बनाएंगे, विकास और समृद्धि के अवसरों का सृजन करेंगे और आगे बढ़ने के लिए आवश्यक विकास का समर्थन करेंगे तभी भारत एक समृद्ध देश बनेगा। परंतु सबसे पहले हमें आध्यात्मिक और सांगठनिक रूप से और अधिक सक्षम होना होगा। इसके लिए देश के प्रत्येक व्यक्ति के बहुमुखी उत्थान एवं उनके कार्यों में सफलता पर ही हमारी वैभव में वृद्धि एवं समृद्धि संभव है।

19. धर्म और संस्कृति महाकुम्भ जिसके आज हम साक्षी बन रहे हैं, वास्तव में एक चिन्तन कुम्भ है। आज ''मातृ संसद'' के इस समागम में लगभग 20 हजार महिला शक्ति एकत्र हुईं हैं एवं अपनी ज्ञान अनुभूति से इस सभा को सुशोभित कर रही हैं। मैं उन सभी नारी शक्ति का

अभिनंदन करती हूं। इस महाकुम्भ में धर्म व संस्कृति से संबंधित व्याख्यानों के माध्यम से इस समागम का कोना–कोना आलोकित हो रहा है। मेरा विश्वास है कि इस संसद से निकले विचार समस्त सवा सौ करोड़ भारतवासियों के आचार–विचार को सकारात्मक रूप से प्रभावित करेंगे। उसे संजोते हुए, अपनाते हुए कैसे 21वीं शताब्दी के तकनीकी सफर में सफलतापूर्वक आगे बढ़े और इसके लिए हमारी मातृशक्ति की क्या अतिरिक्त जिम्मेदारी हो, यह समय इस चिन्तन का है।

28. मैं एक बार फिर, विश्वमांगल्य सभा, जिसने अपने असाधारण तरीके से हमारे राष्ट्र की सेवा का बीड़ा उठाया है, को बधाई देते हुए अपनी बात समाप्त करती हूं। मुझे पूरा विश्वास है कि आपके प्रयास से सभी पीढ़ियों की महिलाएं प्रेरणा लेंगी और समाज के लिए अपना सर्वोत्तम योगदान देने के लिए आगे आएंगी। मेरा यह अनुरोध है कि आप पूरी लगन से अपने प्रयासों को जारी रखें। मैं ''विश्वमांगल्य सभा'' द्वारा आयोजित सभी कार्यक्रमों की पूर्ण सफलता की कामना करती हूं और इसमें सम्मिलित होने वाले सभी लोग यहां से कुछ सकारात्मक लेकर जाएंगे, यह आशा भी करती हूं। मैं आपके भावी प्रयासों के लिए भी अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देती हूं।

धन्यवाद।

———